श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा. व अनंत शांति के प्रदाता, तपस्वी प.पू. मुनिराज श्री अनंतसुंदर वि.म.सा. के वंदन तथा गुरुदेव के मुखाग्रबिंदु से निकली मांगलिक से किया गया। तत्पश्चात भारतीय संस्कृति से ''अतिथि देवो भव'' की परम्परा के अनुरुप अतिथियो का परिचय व स्वागत किया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रुप में माननीय श्री गिरिश वर्या (M.B.B.S.), श्री महेन्द्रभाई दरबार व विधालय के प्राचार्य श्री दीलीप दास का सानिध्य प्राप्त हुआ । तथा आप सभी अतिथियो के द्वारा ध्वजरोहण किया गया । तत्पश्चात बच्चो के द्वारा सामूहिक रुप से ध्वज गीत गाया गया।

हम जिस मिट्टी के अंकुर है, उसकी शान निराली है,
जिसके खेतो से सोना है, बागो मे हरियाली है ।
धन-दौलत से ज्यादा उँचे रिश्ते माँ सन्तान के,
हम बच्चे हिन्दुस्तान के निकले सीना तान के ॥

तत्पश्चात तपोवनी छात्रो के द्वारा परेड की गई । स्कूल की Headboy भावेश किशोरभाई खिवेसरा ने इसका नेतृत्व किया गया । उसके पश्चात माननीय श्री गिरिश वर्या (M.B.B.S.) नवसारी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ । उन्होने बताया की देशप्रेम उन्नति की आधारशीला है। इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए देशवासियों को भीषण संघर्ष करना पडा। तत्पश्चात माननीय प्राचार्य महोदय के द्वारा बताया गया कि स्वतंत्रता की चिंगारी जो शहीदो के द्वारा लगाई है वह कभी बुझनी नहीं चाहिए ।

भारत की मिट्टी से बढ्कर,
कोई चंदन हो नहीं सकता ।
और वंदे मातरम् से बढ्कर,
कोई वंदन हो नहीं सकता ॥

इसी सकारात्मक भावना को व्यक्त करते हुए 10th Class के तपोवनी छात्रो के द्वारा वंदेमातरम् गीत को अतिसुंदर प्रस्तुती दी गई। इस के साथ 8th Class के छात्र काव्य कोठारी ने Independence Day पर English Speech दी ।

कोई हस्ती, कोई मस्ती, कोई चाह पे मरता है,
कोई नफरत, कोई मोहब्बत की लगाव पे मरता है।
ये देश है उन दीवानो का,
जहाँ हर बंदा हिन्दुस्तान पे मरता है ॥

इसी जुनून और जस्बे को 10th Class के तपोवनी छात्रो ने एक सुंदर डांस की प्रस्तुती के रुप मे प्रस्तुत किया था । कार्यक्रम की अगली कडी मे School Head Boy भावेशने गुजराती Speech दी । तत्पश्चात महेन्द्रभाई दरबार का आशीर्वचन प्राप्त हुआ । आप गुरु माँ के परम भक्त है तथा एक समाज सेवक के रुप में आपका जीवन चरित्र है। तपोवन में यदि किसी भी सहाय की जरुरत हो तो आपका सहयोग तथा मार्गदर्शन हर कदम पर प्राप्त होता रहता है।

तत्पश्चात प.पू. मुनिराज अनंतसुंदर विजयजी म.सा. के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। उनके द्वारा शहीद चन्द्रशेखर आजाद की कहानी सुनाइ गई। उनके द्वारा बताया गया कि शहीद चन्द्रशेखर आजाद के मनमें देशप्रेम की भावना बचपन से ही थी।

साथ ही मे गुरुदेव ने जीवन मे तीन संकल्पो का पालन करने के लिए विशेष जोर दिया था।

(१) सदाचार का पालन करना । (२) ब्रह्मचर्य व्रत का पालन एवं
(३) भारत में जब तक गरीबी रहे तब तक फैशन नहीं करना ।

तत्पश्चात विधालय के सर श्री रवि मिश्रा के द्वारा कार्यक्रम की अंतिम कडी के रुप में आभार प्रदर्शन किया गया व कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की गई।

❊ गुरुमाँ पुण्यतिथि कार्यक्रम ❊

बंद किस्मत के लिए कोई चाबी नही होती,
सुखी उम्मीदों की कोई डाली नहीं होती ।
जो झुक जाए प्रभु के चरणों में,
उसकी झोली कभी खाली नहीं होती ॥

श्रमण भगवान महावीर स्वामी के चरणों मे कोटी-कोटी वंदन। जीवन को सरल व शांति प्रदायक बनानेवाले श्री शांतिनाथ दादा के चरणों में भी भावयुक्त वंदन। तथा जिनकी प्रतिमा प्रशांत, मनोज मुद्रा, वाणी विश्व विकासिनी तथा जिनके नयन निर्विकारी व मूर्ति मोह का विनाश करनेवाली है। एसे प.पू. पन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखर वि.म.सा. के चरणो मे शत-शत वंदना। जैसा आप सब को विदित है कि ''श्रावण सुदी दशमी'' के दिन शासनप्रभावक गुरुदेव श्री युगप्रधान आचार्यसम पूज्यपाद गुरुमाँ का ''कालधर्म दिवस'' था । इस हेतु प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी तपोवन संस्कारधाम नवसारीमे भी पूज्य गुरुमाँ की ''छट्ठी पुण्यतिथि'' मनाई गई ।

गुरुमा की तारीफ करुँ कैसे, मेरे शब्दो में इतना जोर नहीं,
सारी दुनिया में जाकर ढूंढ लेना, गुरुमा जैसा कोई और नहीं ।
हृदय से गुरुमा का सुमिरण किया तो, आवाज प्रभु तक जाएगी,
जो गुरुमा ने सुन ली तो, हर बिगडी बन जाएगी ॥

एसे ही गुरुमा के प्रति प्रेम, आदर व समर्पण के भाव गुरुमा की पुण्यतिथि पर हर तपोवनी छात्र के चेहरे पर नजर आ रहे थे। सूर्य की पहली किरण के साथ ही तपोवन में उल्लास की लहर दौड उठी । सबसे पहले दिवस का प्रारंभ तपोवन के गृहपति ''श्री भाविनभाई शाह'' के कथानुसार तपोवनी छात्रो की सामुहिक रुप से शासन वंदना करवाकर किया गया। तत्पश्चात विशाल रेली का आयोजन तपोवनी छात्रो के द्वारा किया गया, जिसमें गुरुमा के चित्र को डोली मे रखकर ''घोष सहित'' छात्रो के द्वारा गाते बजाते व नारे लगाते हुए रेली श्री शांतिनाथ दादा के दरबार तक पहुँची वहाँ संगीत समिति के तपोवनी छात्रो, तपोवन के गृहपति ''भाविनभाई शाह'' व '' मुकेशभाई बारोट'' जो की तपोवन के संगीत सम्राट है, उनके गीतो व भजनो ने सभी को मन मुक्त कर दिया। उसके पश्चात अधिकतर तपोवनी छात्रो के द्वारा सामूहिक दिपक बियासणा किया गया। जिस प्रकार सद्गुरु पाप से संवर की ओर, बंधन से मुक्ति की ओर, आसक्ति से अनासक्ति की ओर अग्रसर करनेवाले होते है तथा निस्वार्थ भाव से शिष्य रुपी यात्रियो को जन्म, जरा मृत्यु बनाम असाध्य रोगो से मुक्ति दिलवाने से पूरा-पूरा